important, I will call you. But if you adopt the other procedure, it will be inconvenient to you not to me. I will simply sit back and smile. That is the attitude I propose to adopt. Two persons have sent me chits. Any Member who has got very urgent information to give to the House, kindly send a note. I will consider it and if it is important, I will certainly call him. Otherwise, not. My judgement may be right or wrong. Kindly accept it.

—

12.08 hrs.

RE-PROBLEMS OF DELHI MEDICAL STUDENTS

SHRI C. K. CHANDRAPPAN (Cannanore): Yesterday, I requested that the problem of medical students should be sympathetically looked into and the Minister should intervene to find out a settlement. Just now, when I was coming to Parliament House. I was told that the Minister had refused to meet those students and they were coming in a procession to Parliament to present their grievances to the Speaker, Sir on the Parliament Street near Jantar Mantar, there was a big police arrangement and nearly thousand medical college students were put behind the bars. Is this the way you are going to solve the problem? I, therefore, request the Minister since he is present, to make a statement and see that this problem is solved.

SHRI VAYALAR RAVI (Chirayinkil): I fully support what Mr. Chandrappan has said. This matter is pending for the last two months. Earlier the Minister has assured us that he will look into the problems of the students. But now, he was not courteous even to meet the students. It has asked a police guard to receive the memorandum. Unfortunately, the hon. Minister with all this socialist background, has become a big bureaucratic capitalist with no sympathies with the medical students. He simply wants to suppress them. Putting them behind the bars hundreds and thousands of medical students will not solve the problem. It will only aggravate the situation more and more. So, I appeal, through you, Sir, to the hon. Minister that , instead of taking a very strict attitude, he should discuss the matter with them and solve the problem and release all of them from the jail forthtwith.

स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्री (श्री राज नारायण): मैं बहुत ही विनम्रता के साथ सदन के माननीय सदस्यों को अवगत कराना चाहूंगा कि यह मामला केवल दो महीनों से नहीं पड़ा हुआ है । यह पिछले तीस साल प्लस दो महीने से पड़ा हुआ है । (व्यवधान) यह मेरी समाजवादी सभ्यता और संस्कार ही है कि जब भी मेडिकल कालेजों या अस्पतालों के लोग, नर्सें, डाक्टर, टीचर्ज, प्रोफेसर्ज या वहां के कर्मचारी आये हैं—चाहे 12 बजे रात को—, तो मैं बराबर उनसे मिला हूं—बराबर ।

माननीय सदस्य यह समझ लें कि मेडिकल कालेज के लड़कों की डिमांड क्या है । एक डिमांड तो उन्हें मिलने वाले इनटर्नशिप के स्कालरशिप को बढ़ाने के बारे में है । दिल्ली में हम 350 रुपये देते हैं । यू० पी०, बिहार, हरियाणा और पंजाब ने यह रकम बढ़ा दी है । जब ये लोग आये, तो हम ने कहा कि हमारी सहानुभूति आप के साथ है, हम कोशिश करेंगे कि आप की रकम भी बढ़े, लेकिन आप यह जो हल्ला-वल्ला कर रहे हैं, इस को छोड़ दीजिए । हमने उन्हें समझाया । फिर मेडिकल कालेज के लड़के आये । कहने लगे कि हमको हाउस जाब्ज भी मिलें, और दिल्ली से जो लड़के निकलें, उन सब की भर्ती आल-इंडिया इंस्टीट्यूट या कहीं भी हो जाये । हमने कहा कि तो फिर आल-इंडिया इंस्टीट्यूट को दिल्ली इंस्टीट्यूट बना दें । लोगों में क्षेत्रीयता की भावना प्रवेश कर गई है । राष्ट्रीयता की भावना खत्म और "दिल्ली-वादिता" की भावना ज्यादा है । यह हमारे

समाजवादी और समतावादी संस्कार हैं कि कल दो घंटे तक स्वास्थ्य मंत्रालय के सम्मानित सचिव ने लड़कों के साथ डीटेल्ड बातचीत की । उनको बताया गया कि बारह हजार के करीब डाक्टर निकलते हैं, क्या उन सब को हाउस जाब्ज देना सम्भव है किसी भी सरकार के लिए ?—नहीं, यह असम्भव है । इसलिए इस मांग को तो हम नहीं मान सकते हैं । उन को पूरी तरह से, ब्यौरेवार, बता दिया गया है । उन को यह जरूर बताया गया कि उन की छोटी-मोटी दिक्कतों को हम दूर करेंगे ।

इनटर्नशिप के स्कालरशिप के मामले में हम ने उन को बताया कि हम अपनी ओर से पूरी कोशिश कर रहे हैं, आप हमारी कोशिश में बाधा न डालें, अगर हड़ताल करोगे, प्रदर्शन करोगे, हल्ला करोगे—और श्रीमन्, आप देख रहे हैं कि केवल मेडिकल कालेज के स्टूडेंट्स ही हल्ला नहीं करते हैं, अब तो कोर्ट में भी हल्ला होने लगा है, जिस के कारण कोर्ट को डेढ़ घंटे तक स्थगित करना पड़ा—

MR. SPEAKER: Let us not go into that. Why not confine to the issue raised?

श्री राजनारायण : अगर कोई इन्दिरा कांग्रेस के इन्स्टीगेशन पर प्रदर्शन करेगा, तो उस का असर इस मस्तिष्क पर बहुत ज्यादा नहीं पड़ेगा । चाहे वे हमारी बात को न भी मानें, तो भी हमारा अपना विवेक कहता है कि कुछ बढ़ोत्तरी होनी चाहिए ।

SHRI C. K. CHANDRAPPAN: The point is that the Minister should discuss the matter with them.

SHRI RAJ NARAIN: Today, this is the only point that it should be discussed thoroughly in Parliament, in the country and everywhere. But why goonda-raj is going into the court; why they are throwing stones on the people. This is not an ordinary question. We are not cowards. We will not always be intimidated.

(व्यवधान) हमने बड़े बड़े गुंडों का मुकाबला किया है । माननीय सदस्य उन से कहें कि वे अपनी हड़ताल और प्रदर्शन वापस ले लें । हम लोग उन की मांगों पर—वे लिखित रूप में हमारे पास हैं—पूर्ण सहानुभूति के साथ विचार कर रहे हैं । आगे भी करेंगे, मंत्रि-मण्डल में भी रखेंगे । मान ले कि किसी एक विभाग ने हमारी बात नहीं मानी तो पूरे मंत्रि-मंडल में रखेंगे । इस से ज्यादा हम क्या कर सकते हैं ? . . . **(व्यवधान)** . . .

मैंने उन से मिलने से कभी इन्कार नहीं किया । मैंने उन को अपने कमरे में लाकर कें तीन दिन तक लगातार बात की । उन के प्रतिनिधियों को, चेयरमैन को, सेक्रेटरी को सब को मैं ने बुला कर बात की ।

MR. SPEAKER: Mr. Minister, you have made a full statement. No further discussion.

SHRIMATI PARVATHI KRISHNAN (Coimbatore): Why should the students be arrested in this democracy? . . . . (*Interruptions*). The Government should be ashmed of this. . . . (*Interruptions*).

श्री मनीराम बागड़ी (मथुरा) : एक जानकारी स्वास्थ्य मंत्री से करनी है . . . **(व्यवधान)** . . .

MR. SPEAKER: No further discussion; this is not Question Hour.

श्री राम विलास पासवान (हाजीपुर) : अध्यक्ष महोदय, . . .

अध्यक्ष महोदय : आप ने कोई नोटिस नहीं दिया है ।

श्री राम विलास पासवान : कल आपने कहा था कि विचार करेंगे ।

MR. SPEAKER: You have not given any notice at all.